LD79DE

6 मुगल साम्राज्य की स्थापना

(बाबर से अकबर तक, सन् 1526 से 1605)

पिछले पाठों में आपने पढ़ा है कि तुर्क सुल्तानों ने छोटे–बड़े कई राजाओं को हराकर एक विशाल सल्तनत की स्थापना की। लगभग दो सौ वर्षों तक भारत में दिल्ली सल्तनत का शासन था। शासन करनेवाला अंतिम वंश–लोदीवंश था जिसकी स्थिति कमजोर थी। उन दिनों पूरे भारत में फिर से कई छोटे साम्राज्य बन गए थे।

बाबर (सन् 1526–1530)

बाबर भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक था। बाबर को तुर्किस्तान में फरगना का एक छोटा–सा राज्य अपने पिता से उत्तराधिकार में मिला था। वह तेरह साल की उम्र में फरगना की गद्दी पर बैठा। लेकिन उसकी कम उम्र का लाभ उठाकर उसके विरोधियों ने उसे फरगना से बाहर कर दिया। बाबर लगातार संघर्ष करता रहा मगर फरगना पर अधिकार नहीं कर पाया। तब उसने काबुल पर अपना अधिकार जमाया। काबुल में वह अपने राज्य का विस्तार करने और अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील रहा। मध्य एशिया में कई ताकतवर शासक थे इसलिए बाबर को वहां कुछ स्थाई सफलता नही मिली। उस समय दिल्ली में लोदी सुल्तानों का शासन था। इसी समय बाबर को पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ ने, जो इब्राहीम लोदी को गद्दी से हटाना चाहता था,दिल्ली पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया।

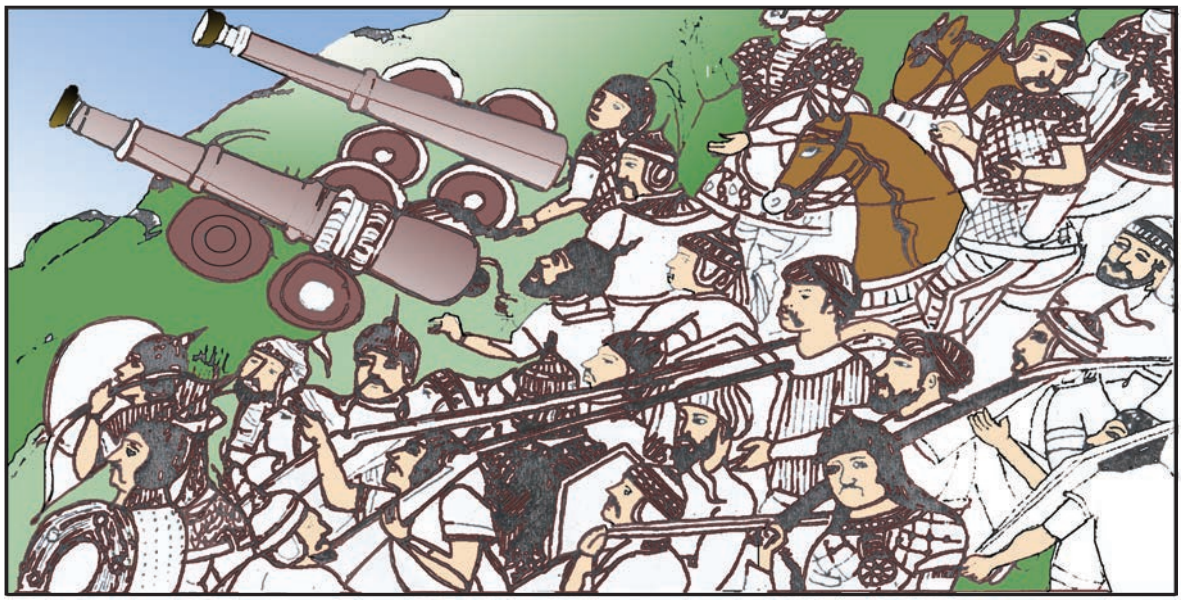

चित्र–6.1 बाबर की सेना

सेना के इस चित्र में आप उस समय भारत में आनेवाले कुछ नए हथियारों की पहचान कीजिए।

बाबर ने 1526 में पानीपत के मैदान में सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त किया। बाबर के पास अच्छी बंदूकें एवं बारूदी तोपें थीं जो भारत के शासकों के पास नहीं थीं। उसके पास कुशल तीरंदाज घुड़सवार थे जो लोदी की सेना में नहीं थे। बाबर की सेना छोटी थी किन्तु अच्छी तरह प्रशिक्षित एवं अनुभवी थी। बाबर ने स्वयं बड़ी कुशलतापूर्वक सेना का संचालन किया, इसलिए बाबर की विजय हुई।

बाबर के सरदार भारत में धन–खजाना लूटकर काबुल लौटना चाहते थे, किंतु बाबर भारत में ही रहकर राज्य की स्थापना करना चाहता था। अपनी विजय को बनाए रखने तथा अपने राज्य के विस्तार के लिए उसने आस–पास के कई राज्यों को हराकर उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया।

बाबर और राणा साँगा

उन दिनों राणा साँगा मेवाड़ का राजपूत राजा था। एक विशाल सेना लेकर राणा साँगा ने बाबर को रोकने का प्रयास किया। राणा साँगा अनुभवी एवं कुशल सेनानायक थे। उसके साथ कई राजपूत राजा व अफगान सरदार मिल गए थे। राणा साँगा की सेना में बाबर की सेना से ज्यादा सैनिक थे। राजपूतों की तैयारी देखकर बाबर की सेना हताश हो गई। उसके सैनिक बिना लड़े ही वापस लौटना चाहते थे। ऐसे में बाबर ने अपने सैनिकों को उत्साहित किया। बाबर ने भविष्य में कभी शराब न पीने का संकल्प किया। उसने सैनिकों को एकत्र कर एक जोशीला भाषण दिया ''वीर सैनिकों! इस दुनिया में जो जन्म लेता है वह एक दिन अवश्य मरता है। हिम्मत से युद्ध करो। यदि युद्ध में हम विजयी होंगे तो हमें साम्राज्य मिलेगा, यदि मारे गए तो शहीद होंगे। सम्मान के साथ मरना अपमानित जीवन से कहीं अच्छा होता है।'' बाबर के भाषण का उसके सैनिकों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। सन् 1527 में खानवा के मैदान में भीषण युद्ध हुआ जिसमें राणा साँगा की हार हुई।

राणा साँगा की हार के बाद बाबर के सामने कोई शक्तिशाली शत्रु न रहा। इस तरह बाबर ने दिल्ली में मुगल सत्ता को स्थापित किया। बाबर सुंदर बगीचों का शौकीन था। उसने भारत में मुगल शैली के कई बाग बनवाए।

बाबर ने अपने जीवन के अनुभवों को विस्तारपूर्वक अपनी आत्मकथा में लिखा है। यह तुर्की भाषा में है और इसका नाम तुजुक–ए–बाबरी है। इसे **बाबरनामा** भी कहते है।

1. बाबर की सेना के पास ऐसा क्या था जो लोदी सुल्तान की सेना में नहीं था?
2. आपके विचार में बाबर ने भारत में साम्राज्य स्थापित करने का निश्चय क्यों किया होगा?
3. बाबर को इब्राहीम लोदी से ज्यादा खतरा राणा साँगा से लगा। आपके विचार में ऐसा क्यों था ?

हुमायूँ (सन् 1530 से 1556)

बाबर की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा हुमायूँ बादशाह बना। पिता के जीते हुए इलाकों को संभालने में उसे काफी कठिनाइयाँ आईं। हुमायूँ को अपने भाइयों के अलावा गुजरात के सुल्तान,

राजपूत और अफगान सरदारों के विरोध का सामना करना पड़ा। वह गुजरात और मालवा के प्रांतों को विजय करने में सफल रहा, किन्तु पूर्वी भारत में अपना अधिकार स्थापित न कर सका। इस क्षेत्र के अफगान सरदार शेरशाह ने उसे हरा दिया। इस हार के कारण हुमायूँ को सन् 1540 में भारत से भागना पड़ा। इसके बाद लगभग 15 सालों तक वह भटकता रहा। उसने ईरान के शाह की शरण ली और उसकी मदद से सन् 1555 में फिर से दिल्ली में मुगल साम्राज्य की स्थापना की लेकिन सन् 1556 में दिल्ली के पुराना किला में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतरते समय उसका पैर फिसला और उसकी मृत्यु हो गई।

शेरशाह (सन् 1540 से 1545)

आप यह जानते हैं कि हुमायूँ को बिहार के शेरशाह नाम के अफगान सरदार ने हराया और उसे भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। शेरशाह एक अफगान सरदार का पुत्र था। बिहार के सासाराम में उसकी छोटी–सी जागीर थी। उसने कई छोटे–बड़े राजपूत और अफगान सरदारों को हराया।

चित्र–6.2 शेरशाह सूरी का मकबरा, सासाराम, बिहार

शेरशाह ने अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए अनेक सुधार किए। उसका एक राज्य अधिकारी राजा टोडरमल ने भू–सुधार कार्य में सहयोग दिया। शेरशाह के शासन में सड़कें, सराएँ और जल–व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया ताकि आम जनता को सुविधाएँ प्राप्त हों, जिन्हें बाद में अकबर ने भी अपनाया और आगे बढ़ाया। शेरशाह ने नए सिक्कों का चलन प्रारंभ किया। पहला था ताँबे का सिक्का जिसे दाम कहते थे तथा दूसरा चाँदी का सिक्का जिसे रुपया कहते थे। उसने सासाराम में अपने लिए एक भव्य मकबरा भी बनवाया। इसके समय में सड़क निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया गया। लेकिन शेरशाह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहा। सन् 1545 में कालिंजर दुर्ग में आक्रमण के समय उसकी मृत्यु हो गई।

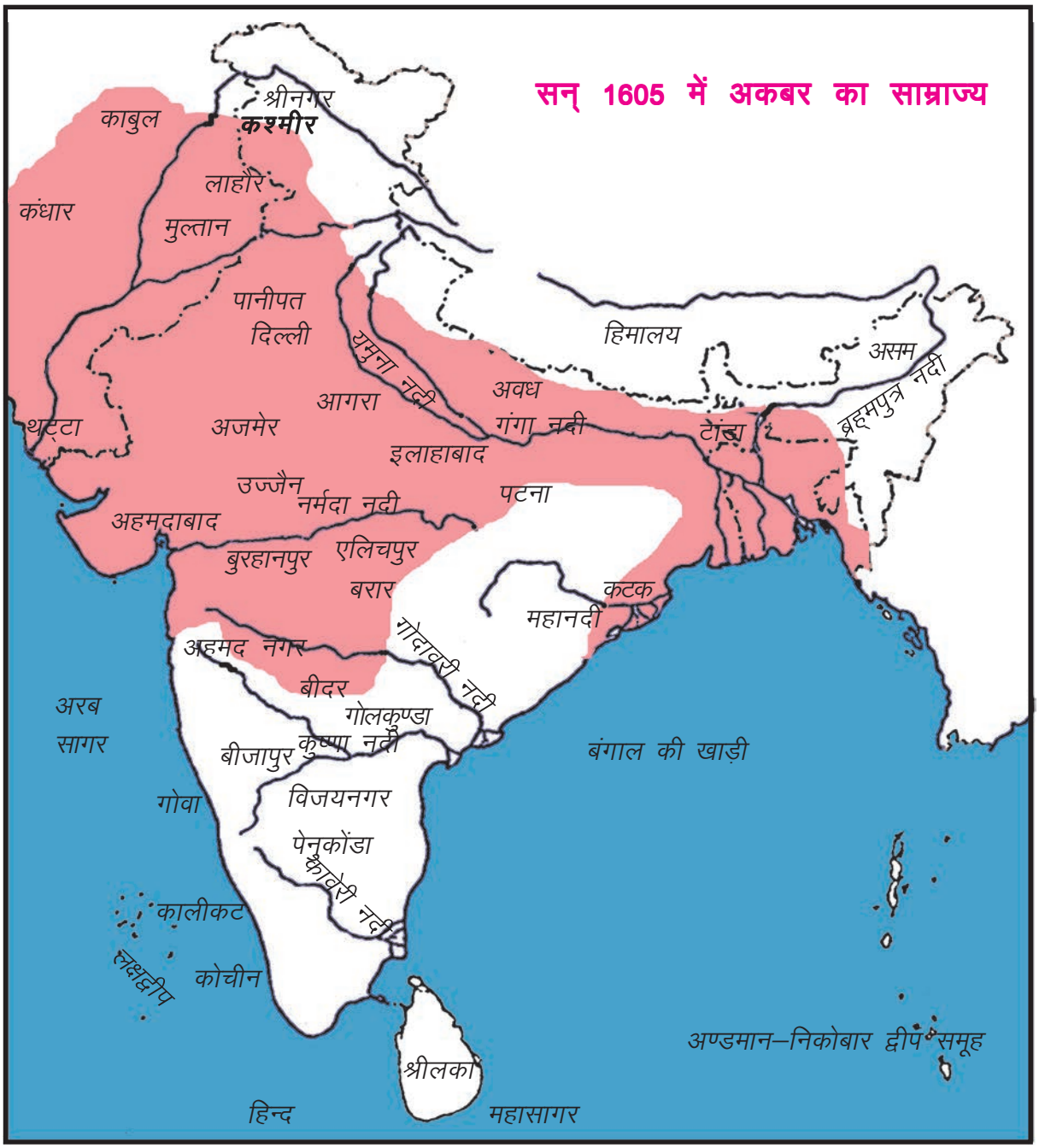

मानचित्र–6.1

अकबर (सन् 1556 से 1605 ई. तक)

पिता हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर बहुत छोटा था, लगभग आप लोगों की उम्र का। हुमायूँ के विश्वासपात्र बैरम खाँ ने उसका राज्याभिषेक किया। बालक अकबर के लिए यह बहुत बड़ा उत्तरदायित्व था। बालिग होने तक अकबर ने अपने संरक्षक बैरम खाँ की देखरेख में राजकाज किया। फिर उसने शासन की बागडोर स्वयं सम्हाल ली तथा योग्यतापूर्वक शासन किया।

चित्र–6.3 अकबर एवं उनका दरबार

राज्य–विस्तार

अकबर एक विशाल साम्राज्य स्थापित करना चाहता था इसलिए उसने आसपास के क्षेत्रों में विजय अभियान शुरू किया। उसकी सेना ने बहुत तेजी से पूरे उत्तर भारत पर विजय पा ली। सन् 1561 में मालवा, 1564 में गोंडवाना, 1568 में चित्तौड़, 1572 में गुजरात और 1574 में बंगाल मुगल साम्राज्य के भाग बन गए। फिर सन् 1586 से 1600 के बीच कश्मीर, सिंध, कंधार, ओडिशा और दक्षिण में बरार, अहमदनगर और खानदेश भी साम्राज्य में मिला लिए गए। मानचित्र–6.1 में इन जगहों को पहचानें।

अकबर एक ऐसा साम्राज्य बनाना चाहता था जिसका भारत के सभी महत्वपूर्ण और ताकतवर लोग साथ दें। शुरू में उसके प्रमुख अधिकारी व सेनापति बाहर से आए तुरानी या ईरानी लोग थे। धीरे–धीरे अकबर ने भारतीय मुसलमान खासकर वे लोग जो सूफी संतों के परिवारों के थे और अफगान जमींदारों को सल्तनत का अधिकारी बनाया। वह राजपूत राजाओं को भी अपना अधिकारी बनाना चाहता था। इसके लिए उसने राजपूत राजाओं के प्रति दोस्ती का हाथ बढ़ाया। उसने राजपूत राजाओं से वादा किया कि अगर वे उसकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे तो वह उनका साम्राज्य लौटा देगा। उन्हें बड़े–बड़े पद भी दिए जाएँगे और वह किसी भी धर्म से भेदभाव नहीं करेगा।

उसने अनेक राजपूत परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। उसने जयपुर के पास स्थित आमेर के कछवाहा वंश के राजा भारमल की सहायता की तथा उसके पुत्र भगवानदास तथा पोते मानसिंह को शाही सेवा में ऊँचे पद दिए। राजा भारमल ने अपनी बेटी का विवाह भी अकबर के साथ कर दिया। शादी के बाद भी राजपूत रानियों को संपूर्ण धार्मिक आजादी थी। अकबर की राजपूत नीति के कारण अनेक राजपूत राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकार की। मेवाड़ के राणा प्रताप को छोड़कर राजस्थान के लगभग सभी शासक अकबर की अधीनता स्वीकार कर चुके थे।

चित्र–6.4 राणा प्रताप

अकबर और राणा प्रताप

सन् 1576 में अकबर ने राणा प्रताप के खिलाफ राजा मानसिंह एवं राजकुमार सलीम के नेतृत्व में एक विशाल सेना चित्तौड़गढ़ भेजी। मुगल सेना और राणा प्रताप की सेना के बीच हल्दीघाटी में युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना विजयी हुई। किन्तु राणा प्रताप

ने हार नहीं मानी। वे चित्तौड़गढ़ की पहाड़ियों में रहकर अपने जीवनपर्यंत मुगलों से संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने मंत्री मेवाड़ के भामाशाह द्वारा उन्हें (राणा प्रताप को) समर्पित धन से अपनी सेना का पुनः संगठन किया और अनेक क्षेत्रों पर अपना अधिकार पुनः स्थापित करने में राणा प्रताप सफल भी हुए।

रानी दुर्गावती और अकबर

गोंड़वाना या गढ़ाकंटगा विस्तृत और संपन्न राज्य था। इस राज्य की राजधानी चौरागढ़ थी और मुख्य निवासी गोड़ थे। सन् 1548 में राजा दलपत के देहावसान के बाद रानी दुर्गावती अपने पाँच वर्षीय पुत्र वीरनारायण सिंह की संरक्षिका बनीं और अपने मंत्रियों के परामर्श एवं सहायता से सफलतापूर्वक शासन करती रहीं। अपनी उदारता, दक्षता एवं सुयोग्य प्रशासन से गोड़वाना में उसने राजनीतिक एकता स्थापित कर ली थी। गोंड़वाना की समृद्धि एवं धन सम्पन्नता को देखकर साम्राज्य विस्तार की भावना से अकबर आक्रमण करना चाहता था। इसलिए आसफ खाँ के नेतृत्व में गोंड़वाना पर आक्रमण किया। रानी ने कवच और शिरस्त्राण धारण कर हाथी पर सवार होकर मुगल सेना पर आक्रमण किया। इस बीच दुर्भाग्य से उसे एक तीर लगा जिससे वह बेहोश हो गयी। होश आने पर उसे अपनी पराजय का पता लगा। शत्रु द्वारा पकड़े जाने और अपमानित होने की आशंका से छाती में कटार भोंककर शहीद हो गई। छत्तीसगढ़ उस समय रतनपुर राज्य कहलाता था। यहाँ पर कल्चुरि राजवंश का प्रशासन प्रभावशील था।

इस तरह अकबर की इन नीतियों के कारण उसके पदाधिकारियों में ईरानी व तुरानियों के अलावा अफगान, भारतीय मुसलमान, राजपूत राजा आदि भी शामिल हो गए थे।

शासन व्यवस्था

अकबर ने अपने विशाल साम्राज्य की व्यवस्था किस प्रकार की ? उसने अपने विशाल साम्राज्य को पंद्रह सूबों में बाँटा। सूबे का क्षेत्र लगभग आज के प्रदेश जैसा ही था। प्रत्येक सूबा (प्रांत), सरकारों (जिलों) में बँटा हुआ था और प्रत्येक सरकार बहुत से परगनों (तहसीलों) में विभाजित था। कई गाँवों के समूहों से एक परगना बनता था। अकबर ने केन्द्र से लेकर परगना तक जिम्मेदार अधिकारियों को नियुक्त किया। मुगल शासन के अधिकारियों को मनसबदार कहा जाता था।

ये मनसबदार कौन थे? उनका क्या काम था?

मनसबदारी व्यवस्था

मुगल साम्राज्य में काम करने वाले अधिकारियों व सेनापतियों को मनसबदार कहा जाता था। प्रत्येक मनसबदार को उसकी सेना के अनुसार एक दर्जा दिया जाता था जिसे मनसब कहते थे। सभी मनसबदारों को बादशाह खुद नियुक्त करता था और उनपर बादशाह का सीधा नियंत्रण होता था। सभी मनसबदारों को घुड़सवारों की एक फौज तैयार रखनी पड़ती थी और जब भी बादशाह को उनकी जरूरत पड़ती उन्हें अपनी फौज के साथ जाना पड़ता था। बादशाह उन्हें अपनी जरूरत के अनुसार कहीं भी नियुक्त कर सकता था। इसके बदले मनसबदारों को विशेषकर बड़े मनसबदारों को बहुत ऊँचे वेतन दिये जाते थे। वे काफी शानशौकत का जीवन बिताते थे।

लेकिन मनसबदारों का वेतन सीधा रुपयों में नहीं मिलता था। उन्हें किसी क्षेत्र से लगान इकट्ठा करके वेतन के बदले रखने को कहा जाता था। इन क्षेत्रों को जागीर कहते थे। वह मनसबदार उस इलाके का जागीरदार कहा जाता था।

मनसबदारों का समय–समय में तबादला कर दिया जाता था ताकि वे स्थानीय लोगों से मिलकर बादशाह के विरुद्ध विद्रोह न करें। साथ ही अकबर ने ऐसी व्यवस्था बनाई कि कोई भी अधिकारी मनमानी न करे और सभी लोग बादशाह की आज्ञा का पालन करे।

मनसबदारों को वेतन किस रूप में मिलता था ?

लगान–व्यवस्था

अकबर जब बादशाह बना तो किसानों से लगान इकट्ठा करने की व्यवस्था काफी कमजोर थी। छोटे अधिकारी व जमींदार किसानों पर मनमानी करते थे। लगान वसूली कभी ज्यादा तो कभी कम हो जाती थी। इसलिए अकबर ने तय किया कि किसान लगान रुपयों में देंगे, न कि अनाज में। किसान जितनी जमीन में खेती करता था उसके हिसाब से उसका लगान तय कर दिया जाता था। आमतौर पर किसानों को अपनी उपज का एक तिहाई या आधा हिस्सा लगान के रूप में देना पड़ता था। किसानों से लगान इकट्ठा करने में स्थानीय जमींदार अधिकारियों की मदद करते थे। किसानों से इकट्ठा किए गए लगान से ही राज्य का खर्चा चलता था।

आज के सरकारी अधिकारियों व मुगल अधिकारियों में क्या समानताएँ व क्या समानताएँ हैं ?

धार्मिक नीति

सन् 1575 से 1585 के बीच अकबर ने कई धर्म गुरुओं से उनके धर्म के बारे में चर्चा की। उसने अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी में मस्जिद के पास एक इबादतखाना (प्रार्थना गृह) बनवाया। इसमें उसने इस्लाम के विभिन्न संप्रदायों के धर्मगुरुओं के अलावा योगियों, हिन्दू, जैन, पारसी व ईसाई धर्मगुरूओं को भी चर्चा के लिए आमंत्रित किया। इन चर्चाओं के फलस्वरूप उसके मन में यह धारणा बनी कि सभी धर्मों में सच्चाई व अच्छाई है। दुनिया में विविधता, अलग–अलग संस्कृति व धर्म, ईश्वर की इच्छा से बने हैं। अतः शासकों को भी इस विविधता को बनाए रखना चाहिए और असहिष्णुता से बचना चाहिए। उन्हें ''सब के प्रति शांति'' (सुलहकुल) की नीति अपनानी चाहिए। इस नीति को बनाने में अकबर के सहयोगी अबुल फजल का महत्वपूर्ण योगदान था। उसी ने अकबर के राज्यकाल का विस्तारपूर्वक इतिहास 'अकबरनामा' लिखा है।

इसी नीति के अनुकूल अकबर ने हिन्दुओं पर लागू जजिया व तीर्थ–यात्रा–कर हटा दिया; मंदिर बनाने की अनुमति दी और हिंदू व जैन मंदिरों व मठों को दान दिया। उसने रामायण, उपनिषद, महाभारत जैसे ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाया। अकबर ने अपने निजी जीवन में भी कई धर्मों की बातों का समावेश किया। वह रोज सूरज की पूजा करता था, मांस, मदिरा आदि का उपयोग कम करने लगा था और दीवाली, नौरोज जैसे त्यौहार मनाता था। उसकी इस नीति से मुगल साम्राज्य को सभी लोगों का समर्थन मिला।

अकबर ने करीब 50 वर्षों तक राज किया। उसके बाद उसका पुत्र जहाँगीर बादशाह बना।

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. मुगल साम्राज्य के सभी अधिकारियों को ..... कहा जाता था।
2. अकबरनामा के लेखक ..... हैं।
3. प्रत्येक मनसबदार को ..... की एक टुकड़ी रखनी पड़ती थी।
4. मनसबदारों को वेतन ..... के रूप में मिलता था।
5. तांबे के बने सिक्के को ..... कहते हैं व चांदी के बने सिक्के को ..... कहते हैं।

2. सही/गलत बताएँ–

1. अकबर की व्यवस्था में किसानों को लगान अनाज के रूप में देना पड़ता था।
2. अधिकारी किसान के बोए गए जमीन की नापकर लगान तय करते थे।
3. किसान को अपनी उपज का एक चौथाई भाग लगान के रूप में देना पड़ता था।
4. लगान इकट्ठा करने में अधिकारियों की मदद जमींदार करते थे।

3. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. बाबर के जीवन के बारे में हमें किस स्रोत से पता चलता है ?
2. हुमायूँ को भारत छोड़कर क्यों जाना पड़ा ?
3. क्या छत्तीसगढ़ अकबर के राज्य के अंदर था?
4. बाबर ने भारत में कौन–सी कला को विकसित करने की पहल की ?
5. राणा प्रताप ने अकबर की अधीनता क्यों नहीं स्वीकार की ?
6. प्रायः लोग अकबर की किन नीतियों से ज्यादा प्रभावित हुए होंगे ?
7. मनसबदारों की नियुक्ति कौन करता था ?
8. मनसबदारों का तबादला क्यों होता था ?
9. अकबर की धार्मिक नीति का वर्णन कीजिए ?
10. अकबर की लगान–व्यवस्था की विशेषतायें बताइए ?

योग्यता विस्तार–

1. मुगलकालीन कुछ प्रमुख इमारतों के चित्रों को एकत्रित कर नामांकित कीजिए।
2. मुगल बादशाहों के नाम की सूची बनाइए।
3. मुगल बादशाह अकबर के काल के त्यौहार और वर्तमान त्यौहार में क्या अंतर है?